

आलस्य और अलबेलापन - 32

अव्यक्त बापदादा :-

➡ _ ➡ इसके लिए विशेष अटेन्शन - हर कर्म करने के पहले यह लक्ष्य रखो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाए सैम्पुल बनाना है। होता क्या है कि संगठन का फायदा भी होता है तो नुकसान भी होता है। संगठन में एक दो को देख अलबेलापन भी आता है और संगठन में एक दो को देख करके उमंग उत्साह भी आता है, दोनों होता है। तो संगठन को अलबेलेपन से नहीं देखना है। अभी यह एक रीति हो गई है, यह भी करते हैं, यह भी करते हैं, हमने भी किया तो क्या हुआ। ऐसे चलता ही हैं। तो यह संगठन में अलबेलेपन का नुकसान होता है। संगठन से श्रेष्ठ बनने का सहयोग लेना वह अलग चीज़ है।

➡ _ ➡ अगर यह लक्ष्य रहे - कि मुझे करना है। मुझे करके औरों को कराना है। फिर उमंग उत्साह रहेगा करने का भी और कराने का भी। और बार-बार इस लक्ष्य को इमर्ज करें। अगर सिर्फ लक्ष्य रखा तो भी वह मर्ज हो जाता है। इसीलिए प्रैक्टिकल नहीं होता। तो लक्ष्य को समय प्रति समय मर्ज करो। लक्ष्य और लक्षण भी बार-बार मिलाते चलो। फिर शक्तिशाली हो जायेंगे। नहीं तो साधारण हो जाता है। अभी इस वर्ष हर एक यही समझे कि हमें 'सिम्पल और सैम्पल' बनना है। यह सेवा की प्रवृत्ति वृद्धि को तो पाती रहती है लेकिन यह प्रवृत्ति उन्नति में विघ्न रूप नहीं बननी चाहिए। अगर उन्नति में विघ्न रूप बनती है तो उसे सेवा नहीं कहेंगे।

(18.01.1986)

➡ _ ➡ यह वर्ष एकस्ट्रा गोल्डन चांस का वर्ष है - जैसे पुरुषोत्तम युग है वैसे यह 'पुरुषार्थ और परिवर्तन' के गोल्डन चांस का वर्ष है। इसलिए विशेष हिम्मत और मदद के इस विशेष वरदान के वर्ष को साधारण 50 वर्ष के समान नहीं गवाना। अभी तक बाप स्नेह के सागर बन सर्व सम्बन्ध के स्नेह में, अलबेलापन, साधारण पुरुषार्थ इसको देखते-सुनते भी न सुन न देख बच्चों को स्नेह की एकस्ट्रा मदद से, एकस्ट्रा माक्रस देकर बढ़ा रहे हैं। लिफ्ट दे रहे हैं। लेकिन अभी समय परिवर्तन हो रहा है। इसलिए अभी कर्मों की गति को अच्छी तरह से समझ समय का लाभ लो।

➡ _ ➡ सुनाया था ना - कि 18 वाँ अध्याय आरम्भ हो गया है। 18वें अध्याय की विशेषता - अब 'स्मृति स्वरूप बनो। अभी स्मृति अभी विस्मृति नहीं। स्मृति स्वरूप अर्थात् बहुत काल स्मृति स्वतः और सहज रहे। अभी युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार, मन को मुँझाने के संस्कार इसकी समाप्ति करो। नहीं तो यही बहुत काल के संस्कार बन, 'अन्त मति सो भविष्य गति' प्राप्त कराने के निमित्त बन जायेंगे। सुनाया ना - अभी बहुत काल के पुरुषार्थ का समय समाप्त हो रहा है और बहुत काल की कमजोरी का हिसाब शुरू हो रहा है। समझ में आया! इसलिए यह विशेष परिवर्तन का समय है। अभी वरदाता है फिर हिसाब-किताब करने वाले बन जायेंगे। अभी सिर्फ स्नेह का हिसाब है तो क्या करना है। स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप स्वतः ही नष्टोमोहा बना ही देगा।

(20.01.1986)

➤ हर कर्म करने से पहले यह लक्ष्य रखना है की,

➤ ➤ ➤ **मुझे सम्पन्न बनना है**

→ सम्पन्न अर्थात **भरपूर**

→ सम्पन्न अर्थात **मालामाल**

■ सम्पन्न बनकर मुझे सबको सम्पन्न बनाना है

➤ ➤ ➤ **मुझे सेम्पल बनना है**

→ सेम्पल अर्थात **आदर्श**

→ सेम्पल अर्थात **उदाहरणमूर्त**

→ सेम्पल अर्थात **प्रेरणामूर्त**

➤ ➤ ➤ **मुझे सिम्पल बनना है**

→ सिम्पल अर्थात **सरल**

➤ ➤ ➤ **लक्ष्य और लक्षण को मिलाते जाना है**

➤ ➤ **लक्ष्य**

➤ ➤ ➤ **मुझे करना है और दुसरो को कराना है**

→ जैसा लक्ष्य रखा है फिर वैसे ही लक्षण आने चाहिए

■ **SMART APPROACH** रखना है

➤ ➤ ➤ **S - SPECIFIC GOAL**

→ हमको क्या करना चाहिए

→ और क्यों हमने यह GOAL रखा है

■ **GOAL SHOULD BE SPECIFIC**

➤ ➤ ➤ **M - MISERABLE**

→ जिसको हम थोडा माप सके, तोल सके

➤ ➤ ➤ **A - ACHIEVABLE**

→ अप्राप्त **GOAL** नहीं होना चाहिए

→ जो हम पूरा ही न कर सके

→ Eg. पुरे दिन में 8 घंटा योग करना है

■ जो हमे पता है की हम नहीं कर सकने वाले है

■ हमारे लिये बहुत मुश्किल है

► तो ऐसा **GOAL** रखना ही नहीं है

➤ ➤ ➤ **R - RELEVANT**

→ बहुत **PRACTICAL** होना चाहिये

➤ ➤ ➤ **T - TIME**

→ अपने मन को एक डेड लाइन दे दो

→ यह कार्य इतने दिन में मुझे करना ही है

■ GOAL को इमर्ज करते रहो (VISUALIZATION)

■ और देखते रहो (PICTURIZATION)

► जो भी करना है उसे पहले मन की आँखों से

VISUALISE करना है

► उसमें **COLOUR** भरना है

»→ _ »→ पहले छोटा लक्ष्य रखना है, फिर बड़ा बड़ा करते जाना है

→ लक्ष्य जो रखा है, उसे बार बार रिवाइस करना है

→ लक्ष्य जो रखा है, उसका प्लानिंग बनाना है

→ लक्ष्य जो रखा है, उसको लिखना है

■ जब हम लिखते हैं, तो उसमें बल भर जाता है

■ फिर अनुभव में लाना है

→ लक्ष्य जो रखा है, उसे बार बार पढ़के **CHEK** करना है और

CHANGE करना है

■ चेक करना है की आज हमने जो सोचा था, वो हुआ के नहीं

➤➤ संगठन

»→ _ »→ संगठन अर्थात संस्था

»→ _ »→ संगठन अर्थात व्यक्तिओ का समूह

»→ _ »→ संगठन अर्थात जुड़ाव

»→ _ »→ संगठन अर्थात **COMPNY**

»→ _ »→ संगठन अर्थात **ORGANIZATION**

→ संगठन में एक दुसरे में उमंग उत्साह आता है

→ संगठन में श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा आती है

→ संगठन में वायुमंडल बनता है

→ संगठन सेफ्टी का साधन है

■ इस किल्ले में अगर रहेंगे तो विकर्म नहीं होगा

■ इस किल्ले से बहार जाते ही विकर्म होगा

■ इस किल्ले में रहने से संगदोष से बचे रहेंगे

► इसलिये स्वयं को इस संगठन के किल्ले के अंदर

रखना है

➤➤ संगठन के फायदे

»→ _ »→ संगठन में नया नया बहुत सिखने को मिलता है

→ हरेक के पास से कुछ नया नया संकल्प / विचार / सोच / टेकनिक

/ भावना होती है

→ हरेक की बुद्धि अलग अलग होती है

■ और अलग अलग रीती से दोड़ती है

► और उससे हम बहुत कुछ सिख सकते हैं

→ हरेक के पास नई कल्पना शक्ति होती है

→ हरेक के पास बहुत सरी विशेषताये होती है

■ EVERYBODY IS UNIQUE ACTOR

→ हरेक का प्लानिंग / स्वभाव / दिव्य गुण अलग अलग होता है

→ अगर कोई बहुत अरछा पुरुषार्थ करता है

■ तो उनको देख दुसरो को भी पुरुषार्थ करने का उमंग आता है

■ उनसे हमे सहयोग शक्ति मिलती है

→ संगठन में हम अपनी कमजोरिया स्वाहा कर सकते हैं

→ संगठन में हम FLEXIBLE हो सकते हैं

→ संगठन से हमारे अंदर ADJUSTMENT POWER आती है

■ एक दो के साथ हम ADJUST होकर चल सकते हैं

→ संगठन में समय सफल होता है

→ संगठन से बल मिलता है

■ की इस साधना के पथ पर मैं अकेला नहीं हु

■ मेरे साथ और भी बहुत सी आत्मा चल रही है

► अगर यह संकल्प रखेंगे तो

► गिरेंगे तो वापिस उठ जाने का बल मिलता है

→ संगठन से हिम्मत / शक्ति / साहस आएगा

→ संगठन से नशा चढ़ेगा

→ संगठन से सोभाग्य प्राप्त होगा

→ संगठन में हमे अगर कोई नया अनुभव हुआ होगा तो वो भी हम संगठन में शेयर कर सकेंगे

→ संगठन में हमारा बंध मुख खुल जायेगा

→ संगठन में हमारा आत्मविश्वास, विल पॉवर बढ़ जाती है

→ संगठन में हमारे अंदर छिपी कला, SKILL निखर जाती है

→ संगठन में हमारी बुद्धि दिव्य हो जाती है

→ संगठन में हमारा परमात्मा के प्रति प्रेम / स्नेह बढ़ जाता है

→ संगठन में हमारी वाणी, कर्म, बोल, संकल्प REFINED होते जायेंगे

➤➤ संगठन के नुकसान

➤_ ➤ संगठन में फायदे के साथ नुकसान भी समाया हुआ है

→ अल्बेलापन आ जाता है

- की इसने भी तो ऐसा किया

- अगर मैंने भी कर लिया तो क्या हुआ

→ माइक हाथ में दे देंगे तो, इससे डरते हैं

→ टकराव होता है

→ अकेले कमरे में साधना करना आसान समझते हैं

- की कमरे में ही पढ़ लेंगे

- परन्तु उसमें मन में जो ENLIGHTEN AREA जो है,

- ▶ उसमें अँधेरा ही रह जाता है

→ COMPETITION समाप्त हो जाता है

→ JEALOUSY आ जाती है

- की यह आगे बढ़ रहा है

- मैं इतना नहीं कर सकती हूँ

→ अगर कोई श्रीमत् का उलंगन करता है

- तो उसे देख दूसरो को भी नियम तोड़ते की हिम्मत आ जाती

है

- इससे नियम मर्यादा में अलबेले हो जाते हैं

➤➤ सेवा

➤➤_ ➤➤ ऐसी सेवा में नहीं खो जाना है

→ जिससे हमारी अध्यात्मिक उन्नति ही रुक जाय

- सेवा तो करनी है पर साथ साथ स्व उन्नति भी करनी है

- पुरुषार्थ भी करना है
